बेडसोर्स के लिए विशेष वस्त्र

कनाडा के केलगेरी विश्वविद्यालय के तंत्रिका वैज्ञानिक सीन ड्यूकलो और उनके साथियों ने एक ऐसा अंडरवेयर तैयार किया है जो व्यक्ति को बेडसोर से बचा सकता है। दरअसल बेडसोर उन छालों को कहते हैं जो चमड़ी पर लगातार दबाव के कारण बन जाते हैं और बहुत तकलीफदेह होते हैं। तकनीकी भाषा में इन्हें प्रेशर अल्सर्स कहते हैं।

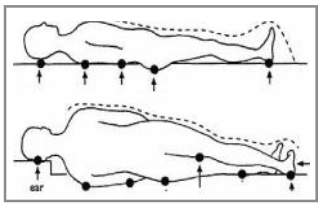

प्रेशर अल्सर्स शरीर के हड्डी वाले भागों पर ज़्यादा होते हैं। जैसे कूल्हों और कमर के निचले हिस्से में। ये छाले मुलायम ऊतकों पर दबाव पड़ने पर निर्मित होते हैं। कारण यह है कि जब किसी हिस्से पर लगातार दबाव बना रहता है तो खून का प्रवाह रुक जाता है। खून का प्रवाह लंबे समय तक रुका रहे तो उस हिस्से का ऊतक मर जाता है। ऐसा तब होता है जब कोई व्यक्ति हिल डुल नहीं पाता और शरीर के कुछ हिस्सों पर दबाव लगातार बना रहता है। यदि व्यक्ति हिलता-डुलता रहे तो एक जगह पर इतना दबाव नहीं बन पाता।

ये छाले अत्यंत तकलीफदेह होते हैं और व्यक्ति को बहुत कमज़ोर कर देते हैं। एक अनुमान के मुताबिक अकेले यू.एस. में हर साल 60,000 लोग बेडसोर्स से सम्बंधित तकलीफों के कारण जान गंवाते हैं। इनमें तरह-तरह के इंफेक्शंस और गेंगरीन होने का ज़ोखिम रहता है।

ड्यूकलो ने उपरोक्त स्मार्ट ई-पेंट का आविष्कार इसी समस्या से निपटने के लिए किया है। इस पेंट में एक इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम फिट रहता है। ये दस-दस मिनट में 10 सेकंड के लिए बहुत हल्का-सा करंट भेजते हैं जो कूल्हों की ग्लूटियल मांसपेशियों के समान क्रिया करता है। यह क्रम दिन में 12 घंटे चलता रहता है। इस क्रिया का परिणाम यह होता है कि उस व्यक्ति के शरीर में वही क्रिया होती है जो हिलने-डुलने के कारण सामान्य रूप से होती है।

ड्यूकलो की टीम ने इस अंडरवेयर की जांच 33 व्यक्तियों पर की है। ये लोग स्ट्रोक, रीढ़ की चोट या मल्टीपल स्क्लेरोसिस की वजह से निष्क्रिय हो गए थे। प्रत्येक व्यक्ति को यह वस्त्र 2 महीने तक प्रति सप्ताह चार दिन तक पहनाया गया था। अधिकांश लोगों ने बताया कि यह वस्त्र आरामदेह है और उन्हें सोने में कोई दिक्कत नहीं हुई। यह जांच इस पोशाक की प्रभाविता को प्रमाणित करने के लिए नहीं थी मगर देखा गया कि जांच की अवधि में किसी भी मरीज़ को बेडसोर्स नहीं हुए। आम तौर पर ऐसे निष्क्रिय व्यक्तियों को बेडसोर्स कुछ ही दिनों में होने लगते हैं।

अब इस पोशाक का परीक्षण बड़ी संख्या में मरीज़ों पर किया जाएगा ताकि इनकी प्रभाविता का पता चल सके। यदि यह कारगर साबित होता है, तो चिकित्सा विज्ञान की एक बड़ी उपलब्धि होगी क्योंकि कई मरीज़ों के मामले में मूल बीमारी की बजाय बेडसोर्स ज़्यादा बड़ी समस्या बन जाते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***